Dated - 24/8/2020

B.A Part - 2 (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
डी० के० कॉलेज जबिरौल

Date / / Page

**नैतिक निर्णय के स्वरूप की व्याख्या कीजिए ?**

Ans:- नैतिक निर्णय वह है, जिसमें ऐच्छिक कार्यों की किसी सामान्य नियम या मापदण्ड से तुलना कर उन कार्यों को उचित या अनुचित, शुभ या अशुभ निर्णय करते हैं। नैतिक निर्णय में कार्यों को शुभ या अशुभ, उचित या अनुचित बतलाते हैं, ऐच्छिक कर्मों का नैतिक मूल्यांकन ही नैतिक निर्णय है। अतः नैतिक निर्णय एक मानसिक क्रिया है, जो किसी कर्म को सामान्य विचार या मापदण्ड से तुलना करके उचित या अनुचित शुभ या अशुभ निर्णीत करती है। नैतिक निर्णय के तीन अंग हैं:-
(i) नैतिक निर्णय देने के लिए एक निर्णायक की आवश्यकता होती है। वही व्यक्ति निर्णय दे सकता है, जो बुद्धि सम्पन्न हो, जिसे नैतिक मापदण्ड या नियम का ज्ञान हो। (ii) नैतिक निर्णय के लिए जिस प्रकार निर्णायक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार विषय की आवश्यकता होती है। बिना विषय का निर्णय संभव नहीं है। विषय का अर्थ जिस पर निर्णय दिया जाता है। (iii) मापदंड :- नैतिक निर्णय के लिए जिस प्रकार निर्णायक और विषय की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मापदण्ड की। आचरण का नैतिक मूल्यांकन नैतिक आदर्शों की तुलना पर करते हैं। नैतिक निर्णय का संबंध मूल्य से रहता है। हम कर्मों के मूल्य को आँकते हैं। नैतिक निर्णय नियामक होता है। यह नियामक इस अर्थ में है कि यह हमारे जीवन को नियमित करता है। "चोरी करना अच्छा नहीं है"। ईश्वर के अनुसार नैतिक निर्णय का स्वरूप आदेशात्मक है अर्थात निर्णय के द्वारा कोई आदेश दिया जाता है जैसे:- माता-पिता की सेवा करनी चाहिए का अर्थ है माता-पिता की सेवा करो।
नैतिक निर्णय तथा तथ्यात्मक निर्णय में अंतर। निर्णय दो प्रकार के होते हैं, तथ्यात्मक एवं मूल्यात्मक। तथ्यात्मक निर्णय वह निर्णय है, जिसमें किसी तथ्य या घटना का वर्णन होता है जैसे- कलम लाल है, सूरज पूरब में उदित होता है। तथ्यात्मक निर्णय में घटना की आलोचना या मूल्यांकन नहीं होता। मूल्यात्मक निर्णय वह निर्णय है, जिसमें घटना का मूल्य आँका जाता है जैसा पंखा सुन्दर है। श्रम अच्छा होता है इत्यादि। इन निर्णयों में पंखा एवं श्रम का मूल्य आँका गया है। अतः पहला अंतर यह है कि तथ्यात्मक निर्णय का संबंध तथ्य से है तथा मूल्यात्मक निर्णय का संबंध मूल्य से है। दूसरा अंतर यह है कि तथ्यात्मक निर्णय का संबंध 'है' से है परन्तु मूल्यात्मक निर्णय का संबंध 'चाहिए' से है। तीसरा अंतर यह है कि नैतिक निर्णय में बाध्यता रहती है परन्तु तथ्यात्मक निर्णय में कोई बाध्यता नहीं होती।

—— X ——